सोहं हरि T-8 सोहं

साहिब श्री गुरू रविदास जी महाराज

ट्रैक्ट नं. 8

बेगमपुरा सहर को नाउ ॥

पहली बार : 2000, जनवरी-2001

अनुवादकर्ता : अश्वनी हीर

प्रस्तुति :

श्री गुरू रविदास मिशन प्रचार सभा

गांव व डाकखाना बिनपालके, नज़दीक भोगपुर

ज़िला : जालन्धर-144 201 (पंजाब)

मुल्य : स्वयं पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं

संक्षेप जीवन परिचय : श्री गुरू रविदास जी

जब ब्राह्मणवाद ने भारतीय बेसहारा दबी-कुचली नीच समझी जाने वाली जातियों, गरीबों को असहनीय कष्ट देकर गुलाम बनाने की कोशिश की तो इन दुखियों की पुकार सुनकर 1414 ई० (सम्वत् 1471) पूर्णिमा दिन रविवार को दीन-दुखियों के मसीहा जगत-गुरू, गुरू रविदास जी का आगमन हुआ।

आपके जन्म तिथि सम्बन्धी विद्वानों में अभी मतभेद हैं। परन्तु बहुत से बुद्धिमान लेखकों, इतिहासकारों के विचारों, डेरा सचखण्ड बल्लां द्वारा की गई खोज, संत मीराबाई तथा सिकन्दर लोधी के जीवन काल के अन्तर्गत उपरोक्त तिथि हीं उचित मानी जा रही है।

आपके जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी अभी तक एक राय नहीं हो पाई है। बहुत से विद्वान आपका जन्म बनारस स्थित हिन्दू युनिवर्सिटी के नज़दीक सीर गोवरधनपुर और कुछ के अनुसार बनारस छावनी के रेलवे स्टेशन से 3-4 किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित चरमकारां की बस्ती मन्डुआ ढीह में हुआ। परन्तु अधिकतर विद्वानों और डेरा सचखण्ड बल्लां की नवीन खोज के अन्तर्गत सीर गोवरधन पुर को ही प्रमाणिकता दी जा रही है। आज यहां पर डेरा सचखण्ड बल्लां जो रैदास समुदाय का धार्मिक प्रतिनिधित्व कर रहा है, ने बहुत ही सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया है। यहां पर दूर-दूर से श्रद्धालु जथे आकर अपने ईष्ट को याद करते हैं। यद्यपि यह पावन स्थान सर्वमाननीय हो गया है, परन्तु फिर भी हमें मन्डुआ ढीह स्थान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि हो सकता है मन्डुआ ढीह स्थान पर श्री सतगुरू निवास करते हों या किरत कर संगत को उपदेश देते होंगे। गुरू जी कथन करते है :

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता॥
नितहि वानारसी आस पासा॥
(गुरू ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९३)

इसलिए हमें इस स्थान का भी विकास करना चाहिए।

आपका परिवार :

आपके पिता जी का नाम संतोखदास और माता का नाम कलसा था। आपकी पत्नी का नाम लूणा और आपके सपुत्र का नाम विजय दास था।

आपने भारत की अनेक यात्राएं की। इसी कारण आपके विभिन्न राज्यों में बसे श्रद्धालुओं ने आपको विभिन्न नाम से याद किया और करते हैं। संत मीरा बाई आपको रैदास जी के नाम से याद करती थी। इस प्रकार आपके अन्य कई प्रकार के मिलते-जुलते नाम थे जैसे रविदास, रूईदास, रोईदास, राएदास आदि। लेकिन आपका अधिकतर प्रचलित नाम गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित नाम सतगुरू रविदास जी ही है। अलग अलग भाषा बोलने वाले लोगों ने अपनी भाषा की लय के अनुसार आपका नाम रख लिया।

शिक्षा और वाणी :

गुरू साहिब के जीवनकाल में दलितों, शूद्रों को शिक्षा ग्रहण करने की मनाही थी। इसलिए कोई भी पंडित, मौलवी, दलितों को शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं था। परन्तु गुरू जी ने अपनी वाणी में हिन्दी, पंजाबी, ब्रिज, फारसी शब्दों का प्रयोग किया। नि:सन्देह उन्हें प्रलोक से ही लोक भाषाओं का ज्ञान था। पारब्रह्म ने स्वयं गुरु जी को शिक्षा का वरदान देकर संसार में भेजा था। मिहर चंद मिहर की पुस्तक "नूरी रविदास" के अनुसार पंजाबी लिपी (गुरुमुखी लिपी) के रचनाकार गुरू रविदास जी ही हैं। संत जसवंत सिंह जी ने लाहौर उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट) से मुकद्दमा जीतकर यह सिद्ध किया है कि पंजाबी के अक्षरों की रचना गुरू रविदास जी ने की है।

आप जी के 40 शब्द तथा एक श्लोक गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। पहली उदासी के समय जब श्री गुरू नानक देव जी बनारस पहुँचे तो उनका मिलन गुरू रविदास जी के साथ हुआ। दोनों महापुरुषों में अध्यात्मिक विषय पर विचार-विमर्श हुआ। गुरू नानक देव जी गुरू रविदास साहिब की वाणी और विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए और आपके द्वारा रचित वाणी लेने की इच्छा प्रकट की। गुरू साहिब ने उस समय जितनी भी वाणी लिखी वह सब गुरू नानक साहिब को दे दी, जिसे बाद में गुरु अर्जुन देव जी ने गुरू ग्रंथ साहिब में सुशोभित कर गुरू ग्रंथ साहिब को जगत गुरु माना।

वाणी गुरु गुरू है वाणी॥

इस के अतिरिक्त गुरू रविदास जी की बहुत सी वाणी दूसरे अन्य धार्मिक ग्रंथों में मिलती है। यहां यह भी एक वर्णन करने योग्य बात है कि बहुत से महापुरूषों, गुरूओं ने अपनी बाणी में गुरू रविदास जी की महिमा गाई है।

आपकी विचारधारा से प्रभावित होकर बहुत से राजे-महाराजे, रानियां, आपकी सेवक बनी, जिनमें से संत मीरा बाई, राजा पीपा, रानी झाला बाई, राणा सांगा आदि मुख्य हैं। उस समय श्री गुरू रविदास जी को राजगुरु कहा जाता था।

गुरू रविदास जी के इतिहास की खोज संक्षेप में करना अभी बाकी है, जो हमारे समुदाय का मार्ग दर्शन करेगी। हमें चाहिए कि विश्व स्तर पर गुरू रविदास मिशन संस्था बनाई जाए। प्रत्येक वर्ष संस्था की ओर से विश्व कानफ्रैंस करवाई जाए। फिर कानफ्रैंस में हुए विचार-विमर्श के आधार पर गुरू जी के जीवन से सम्बन्धित कथाओं-कहानियों, घटनाओं और तिथियों का चुनाव कर गुरू जी के जीवन का इतिहास अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित किया जाए तांकि हमारी कौम (समुदाय) के लोग अलग-अलग विचारधाराओं का त्याग कर केवल एक माला के मोती बन जाएं

तथा सारी दुनियां में गुरु साहिब का प्रचार किया जाए। जब तक हमारे विचार एक नहीं तब तक हमारी कौम (समुदाय) एकजुट नहीं हो सकती।

गुरू रविदास मार्ग और हम

यदि हम वर्तमान धार्मिक परिस्थितियों का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से यह परिस्थितियां दलित समुदाय के लिए बहुत बड़े खतरे की सूचक हैं, क्योंकि वह अपने मसीहा साहिब गुरू रविदास जी महाराज के दर्शाए वैज्ञानिक मार्ग को भूल कर अन्य बुरे रीति-रिवाज़ों, कर्मकाण्डों में फंसते जा रहे हैं। कोई दलित किसी देवी-देवताओं के दर पर जा रहा है, कोई किसी पीर-पैगम्बर की मसीतों की पूजा कर रहा है और कोई साधु के आगे अपनी नाक रगड़ रहा है। इन्हीं वहमों-भरमों के कारण ही दलित वर्ग अपनी मूल भारतीयता, धार्मिकता आदि सब कुछ खो बैठा है। जब तक हम इन बुरे क्रियाकलापों का त्याग कर गुरू साहिब जी द्वारा दर्शाए वैज्ञानिक मार्ग के धारक नहीं बन जाते तब तक हमारा उद्धार नहीं हो सकता।

आज का युग वैज्ञानिक और तर्कशीलता का युग है। इसमें पुरातन कर्म-काण्डों, आडम्बरों के लिए कोई स्थान नहीं है। गुरू जी की वाणी में इनका ज़ोरदार खण्डन किया गया है। हमें इन सब का त्याग कर गुरू साहिब की वाणी से मार्ग-दर्शन लेना चाहिए और अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित कराना चाहिए। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रत्येक गांव-शहर में गुरू का द्वार होना चाहिए जिसमें गुरू साहिब की वाणी अथवा पोथी साहिब को सुशोभित करना चाहिए। गुरू साहिब की पोथी साहिब हिन्दी भाषा में सरलता से प्राप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त हमें मीरा बाई की वाणी का पाठ भी करना चाहिए। प्रत्येक रविवार को हमारे समुदाय के लोगों को गुरू साहिब की वाणी का पाठ करवाना या सुनना चाहिए। यदि किसी गांव में मन्दिर न हो तो उसे किसी व्यक्ति के घर में ही

करवा लेना चाहिए। गांव में गुरू साहिब की वाणी का पाठ करने वाले व्यक्ति तैयार करने चाहिएं। एक विशेष समागम पूर्णमासी के दिन सभी दलितों को इक्टठे होकर करना चाहिए और गुरू साहिब की वाणी के महत्त्व पर प्रकाश डालना चाहिए। एक ओर यहां हमने इस समागम के माध्यम से गुरू साहिब का ध्यान करना है वहीं दूसरी ओर हमने अपने समाज में पाए जाने वाले वहमों-भरमों, आडम्बरों आदि बुराईयों से दूर रहने का प्रचार भी करना चाहिए। गुरू साहिब शराब के सम्बन्ध में इस प्रकार प्रवचन करते हैं :

सुरा सलल क्रित बारूनी रे॥
संत जन करत नहीं पावं॥

(गुरू ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९३)

इसका भावार्थ कि शराब भले ही गंगा जल से क्यों न बनाई जाए फिर भी वह पीने योग्य नहीं है। संतजन उसका सेवन नहीं करते। इस प्रकार हमें अपनी नौजवान पीढ़ी, बच्चों को शराब, पान, बीड़ी, अफीम, तम्बाकू आदि के सेवन से दूर रहने का उपदेश करना चाहिए।

हमारे समाज के सभी कार्य चाहे वे खुशी के हों या गमी के, गुरू साहिब की वाणी का पाठ करवा कर सम्पन्न करने चाहिएं। क्योंकि गुरू साहिब की वाणी पारब्रह्म की वाणी है। प्रभु ने स्वयं गुरू साहिब के द्वारा उच्चारण करवाई है। हमें अपने घरों में भी गुरू साहिब जी की वाणी के छोटे 'गुटका साहिब' सुशोभित करने चाहिएं जिससे प्रत्येक व्यक्ति सुबह शाम इसका पाठ करें। अत: हमें गुरू रविदास जी महाराज के दर्शाए मार्ग के अनुसार ही अपने जीवन को चलाना चाहिए। गुरू साहिब का मार्ग वैज्ञानिक तथा पारब्रह्म को मिलाने वाला मार्ग है। यह अन्य दूसरे मार्गों से बिलकुल अलग है और सही मार्ग है। इस प्रकार ए दलित समाज! यदि तुम इस मार्ग पर चलोगे तो दूसरे लोग तुम्हारी और देखकर चकित रह जाएंगे। तुम एक अच्छे जीवन की मिसाल बनोंगे। सो आओ! हम

सब मिलकर समाज में फैले झूठे वहमों-भरमों, कर्मकाण्डों, काम, अहंकार आदि का त्याग कर गरीबों की सहायता कर गुरू रविदास जी के बेगमपुरा सहर बसाने के हुक्म को अंतिम रूप दें।

कह रविदास चमार

गुरू रविदास जी एक महान विद्वान, महापुरूष, विश्व के पहले वास्तविक समाजवादी और समाज़ सुधारक थे जिन्होंने कभी अपनी जाति को नहीं छिपाया। उन्होंने अपनी वाणी में हर जगह अपनी जाति का ज़िक्र किया तांकि आने वाला दलित समाज अपनी नीच समझी जाने वाली जाति को सम्मानजनक बना सकें। परन्तु हम अनपढ़, गंवार थोड़ी सी शिक्षाएं पास कर हर जगह, हर वक्त अपनी जाति को छिपाते रहते हैं तांकि क़िसी को पता न चल जाए कि हम चमार, वाल्मीकि, जुलाहे आदि हैं। हम लोगों के बीच अपने आपको उच्च जाति के लोग होने का दिखावा करते हैं। ऐसा करने के बावजूद भी हमारे भाई-बहनों, बच्चों की शादी, रिश्ते आखिर चमार, जुलाहों आदि से ही होते हैं। क्या हम गुरू रविदास जी से बड़े या ज्यादा समझदार हैं जो अपनी जाति को छिपाते हैं? जाति छिपाने के लिए शायद हमने अपनी दुकानों, दफ़्तरों, घरों में गुरू साहिब की तस्वीरें नहीं लगाईं। हम अपने बच्चों को गुरू जी के जीवन के वारे में नहीं बताते तांकि वे बाहर जाकर किसी से जाति का भेद न खोल दें। जरा सोचें यदि कोई बच्चा अपने आप को लोगों में आपका अंश होने से इन्कार करे तो आप पर क्या बीतेगी। ए अहसानफरामोश दलितो, यदि गुरू रविदास जी, गुरू कबीर जी, गुरू नामदेव जी, स्वामी वाल्मीकि जी और बाबा साहिब डॉ. अम्बेदकर जी अपनी जाति को छिपा कर रखते, संघर्ष न करते तो आज भी हमारा वही हाल होता, गले में मटका लटक रहा होता। पीठ के पीछे बंधा झाड़ू और पीने को छप्पड़ का गंदा पानी। आज जो हमारी दशा में सुधार है तो इन महापुरुषों द्वारा अपनी जाति को न छिपाकर संघर्ष को अपनाने का कारण ही है।

याद रखने योग्य बातें

- गुरू रविदास जी के गुरू पारब्रह्म ही थे।
- गुरू जी की विचारधारा मूर्ति पूजा का खण्डन करती है।
- गुरू जी का जन्म सीर गोवरधनपुर-कांशी बनारस में हुआ।
- गुरू जी की पत्नी का नाम माता लूणा व पुत्र का नाम विजयदास था।
- गुरू जी को अवतार शब्द से सम्बोधित करना उचित नहीं।
- गुरू जी ने मानवता को प्रभू से जोड़ने तथ इसे अन्ध विश्वासों से मुक्त करने के लिए, नागपुर, भोपाल, जोधपुर, बम्बई, हैदराबाद, दोरा-खैबर, श्रीनगर, डल्हौज़ी और अन्य बहुत से प्रान्तों व शहरों की पैदल यात्राएं की।
- गुरू जी की विचारधारा के अनुसार मूर्तिपूजा, धूप-दीप, जठेरों की पूजा, व्रत रखना, सराध करवाना, अच्छे-बुरे दिनों का विचार करना, मसीतों-मसानों की पूजा आदि सब वयर्थ कर्मकाण्ड हैं। केवल शब्द की कमाई ही सच्ची है।

प्रार्थना

इस सभा के सदस्य मज़दूर व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हैं। इस मुफ्त ट्रैक्ट की सेवा सदस्यों की तुच्छ भेटा और अन्य श्रद्धालुओ के सहयोग से की जाती है। इसलिए आप अपनी सच्ची मेहनत में से आर्थिक सहायता के रूप में कुछ धन भेजें जी।

यदि आप गुरू साहिब जी के जीवन या वाणी के सम्बन्ध में कोई प्रश्न पूछना चाहें तो निम्न पते पर सम्पर्क करें :

कृपा अपने बहुमूल्य सुझाव हमें भेजें। यह भी लिखें कि गुरू साहिब के मिशन के किस विषय पर ऐसे ट्रैक्ट अधिकतर छपवा कर भेजने चाहिएं।

सहायता भेजने व जानकारी हेतु पता :

श्री गुरू रविदास मिशन प्रचार सभा

गांव व डाकखाना बिनपालके, नज़दीक भोगपुर

ज़िला : जालन्धर-144 201 (पंजाब)